XXI. ॥ ४६ [°णोर्युध्यम्] ॥१॥२८॥

XXII. ॥ ४७ ॥१॥ ४८ [भन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधंतमानां त्वा प°]
॥२॥ ४९ [ककुभ्ऌ रूपं - बृहत्सोमः सोमस्य पुरोगाः शुक्रः शुक्रस्य पु°]
॥३॥ ५० ॥४॥३२॥ ॥ द्वाविंशत्यरनुवाकेषु द्वात्रिंशत् ॥ ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ॥

I. ॥ ७. २७ a-d ॥१॥ e-g ॥२॥ २८ ॥३॥ २९ a ॥४॥ २९ b [प्रजया भू-
यासऌ सुवी°] ॥५॥

II. ॥ ७. ४१ - सूर्यम् ॥१॥ ४२ - °स्युषश्च ॥२॥ ४३ - विधेम ॥३॥ ४४ - जर्हृ-
षाणः ॥४॥ ४५ a. b ॥५॥ ४५ c. d. ४६ a [विदेय] ॥६॥ ४६ b [गेह -
°विश] । ४७ a - °त्वमश्यात् ॥७॥ ४७ a आयुर्दा° - क्षीत्रे । b [°त्वमश्या-
त्प्रा° मयो म°]. c [°त्वमश्यात्व° मयो म°]. d [°त्वमश्याद्वयो दा° मयो म°]
॥८॥ ४८ तवं काम सता भुंनजामहे ॥९॥१४॥

III. ॥ ८. १५ - °थानाम् ॥१॥ १६ ॥२॥ १७ [सऌरराणो य°] - दधातु ॥३॥
१८ - वसूनि ॥४॥ १९ - °ष्वतानु ॥५॥ २० - विद्वान् ॥६॥ २१ [गातु-
मित्वा] ॥७॥ २२ ॥८॥२२॥

IV. ॥ २३ ॥१॥ २४ ॥२॥ २५ ॥३॥ २६ - लोकः परि च वह्नि शं च व-
ह्नि । २७ ॥४॥२६॥

V. ॥ २८ ॥१॥ २९ [यस्यास्ति - यस्या यो°] ॥२॥ ३० ॥३॥ ३१ ॥४॥ ३२
॥५॥३१॥

VI. ॥ ४२ ॥१॥ ४३ हव्ये काम्यऽइले रन्ते चन्द्रे - अग्निये नामानि देवेषु
मा -] ॥२॥ ५१ ॥३॥ ५२ अगन्म - °ज्योतिः ॥४॥ ५३ a ॥५॥ ५३ b
- प्रजया भूयासऌ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः ॥६॥३७॥